अध्याय 25

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ अपने द्वारा परमेश्वर के लिए शिष्य निर्माण करने के इस पाठयक्रम व समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंपे।

2	**आराधाना** (20 मिनट)	*[परमेश्वर की विशेषताएं]* **परमेश्वर असीमित है।**

परिभाषा

सिखाए. आराधाना क्या है? आराधाना की परिभाषा निम्नलिखित है:

आराधाना: परमेश्वर का भय मानने वाला, उसकी प्रशसां करने वाला, उसके प्रति अधीन व समर्पित भाव है, जो हमारी विविध प्रार्थनाओं और हमारी दिनचर्या में प्रगट होता है।

परमेश्वर की आराधाना करने क लिए, हमें सबसे पहले यह जानना ज़रूरी है कि परमेश्वर कौन है। आराधाना के प्रत्येक समय में हम परमेश्वर की एक विशेषता को सीखते हैं।

ध्यान करना.

इस सन्दर्भ में शिक्षा दें या पढ़ कि 'बाइबल का परमेश्वर एक असीमित परमेश्वर है।

1.परमेश्वर समय की सीमा से परे है। लेकिन उसने अपने आपको समय सीमा में होकर प्रगट किया है।

भजन संहिता 90:4 **पढें।** जो 'समय' सारे जगत को बनाने में लगा था वह परमेश्वर की ईश्वरीय प्रवृति का समय था,जिसे मनुष्य की समय सीमा के दायरे में होकर समझाया नहीं जा सकता, क्योंकि मानवीय दृष्टिकोण में होकर जो जो हम यह जानते हैं वह यह है कि परमेश्वर ने सृष्टि की रचना के चौथे दिन 24 घंटे का एक दिन और 365 दिन का एक वर्ष बनाया(उत्पत्ति 1:14)। परमेश्वर ने प्रारम्भ में सारे आकाश मण्डल और धरती को बनाया (उत्पत्ति 1:1),यह परमेश्वर द्वारा अपनी सृष्टि को "छ: ईश्वरीय दिनों" में आदेश देने से पहले, और 24 घण्टे का एक दिन बनाने से पहले था। 'ईश्वरीय सृष्टि के दिन' को मानवीस समय के पैमाने के द्वारा नहीं नापा जा सकता है(उत्पत्ति 1:5)। लेकिन फिर भी एक सामान्य दिन की अवधि 24 घण्टे व एक वर्ष की अवधि 365 दिन निर्धारित कर दी गयी है। परमेश्वर अपनी सृष्टि की सीमाओं से बंधा हुआ नहीं है इसलिए वह 'समय' से भी नहीं बधां है, जिसे उसने स्वयं ही बनाया है। वह भूतकाल, वर्तमान व भविष्य काल की 'समय सीमा' से बंधा हुआ नहीं है। परमेश्वर चाहे तो समय को आगे बढ़ा सकता है या उसे पीछे भी कर सकता है। वह चाहे तो जैसा उसने किया भी, बीते समय में या चाहे तो समय के आगे भी जा सकता है।

मानवीय इतिहास में, परमेश्वर मनुष्य के समय के दायरे से परे है। वह अपनी सर्वश्रेष्ठ शक्ति द्वारा मानवीय इतिहास की सारी घटनाओं को नियन्त्रित करता है। हालांकि परमेश्वर मानवीय समय सीमा के दायरे से परे है, फिर भी उसने अपने आप को मनुष्य की समय सीमा में होकर ही पगट किया है। अपने ईश्वरीय स्वभाव

के साथ साथ मानवीय देहधारण करने के द्वारा परमेश्वर ने मानवीय समय सीमा और मानवीय इतिहास में प्रवेश किया। यही वह एकतात्र तरीका था जिसके द्वारा परमेश्वर अपने आप को सिद्ध तरीके से मनुष्यों पर प्रगट कर सका(गलातियों 4:4; 1 यूहन्ना 1:1।)।

2. परमेश्वर के विचार अथाह हैं। लेकिन तब भी लोग परमेश्वर की बातों को समझ सकते हैं।

यशायाह 55:8-9; व्यवस्थाविवरण 29:29 पढं। परमेश्वर के बहुत से विचार और योजनाएं हैं जिन्हें परमेश्वर ने अभी तक मुनष्यों पर व्यक्त नहीं किया है। सम्पूर्ण जगत की रचना करने के सन्दर्भ में परमेश्वर के विचार, बुराई के मूल के सन्दर्भ में उसके विचार, उसके विचार कि उसने क्यों मनुष्य को पापों में गिरने दिया, तथा उद्धार व न्याय के बारे में उसके बहुत से विचार अभी तक मनुष्यों पर प्रगट नहीं किये गये हैं। परमेश्वर के अपने बारे में विचार: मानवीय इतिहास में उसके उद्धार की योजना व उसका ईश्वरीय स्वभाव मनुष्यों पर प्रगट नहीं किया गया है। हमारे व्यक्तिगत जीवन के लिए परमेश्वर के योजना तथा हमारे जीवन में उसके कार्य करने का तरीका उसने मनुष्यों पर प्रगट नहीं किया है। ये सारी बातें परमेश्वर ने छुपा कर रखी है जिसे हम परमेश्वर का रहस्य कह सकते हैं,ये सारी बातें परमेश्वर के नियन्त्रण में हैं और मनुष्य कभी भी उसकी थाह तक नहीं पहुँच सकता। सारी रहस्यमय बातें व भेद केवल परमेश्वर के हाथों में हैं।
उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने हमें कभी नहीं बताया कि उसने खास लोगों को ही हमारे माता पिता होने के लिए क्यों चुना था, उसने कब हमें पैदा किया और जीने का अवसर प्रदान किया, उसने हमें इस धरती पर कहाँ ठहराया, उसने हमें इस प्रकार की देह, भावनाएं व बुद्धि क्यों प्रदान की। उसके बावजूद भी वे सारी बातें जो हमें बतायी नहीं गयी हैं, उसकी सिद्ध, श्रेष्ठ और अनन्त योजना में उपयुक्त ठहरती हैं।
लेकिन बहुत सी बातों को परमेश्वर ने मनुष्यों पर प्रगट किया है! परमेश्वर ने अपने स्वभाव, चरित्र, मनुष्य के पापी स्वभाव और मानवीय इतिहास में उसकी उद्धार की योजना को लेकर बहुत सी बातों को प्रगट किया है। ये सारी बातें प्रगट बातें कहलाती हैं। प्रगट बातें हमारी और हमारे बच्चों के लिए हैं। हम उन्हें जान सकते हैं और हमें उन्हें ज़रूर जानना चाहिए।

3. परमेश्वर की सामर्थ्य की कोई सीमा नहीं है।

यिर्मयाह 32:17, 27 पढ़ें। परमेश्वर ने अपनी श्रेष्ठ व महान शक्ति के द्वारा जगत को बनाया है। परमेश्वर के लिए कोई भी काम कठिन नहीं है। मानवीय समस्याएं, मानवीय,अक्षमताएं, अयोग्यताएं(शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक व सामाजिक इत्यादि) और मानवीय कमज़ोरियाँ या र्दुभाग्य कभी भी परमेश्वर की योजना के आड़े नहीं आ सकते। वे कभी परमेश्वर की योजना को सीमित या बाधित नहीं कर सकते। हो सकता है कि वे हमारे लिए समस्या हों, लेकिन वे परमेश्वर के लिए कोई समस्या नहीं हैं। क्योंकि परमेश्वर के लिए कोई भी काम असम्भव नहीं है(लूका 1:37)। परमेश्वर सारे जगत में सर्वश्रेष्ठ है। वह जो चाहे करता है और वह अपनी योजना को शत-प्रतिशत पूर्ण करेगा (यशायाह 14:24-27)। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि जो कुछ परमेश्वर के बच्चों के साथ हो रहा है उसे परमेश्वर की ओर से अनुमति मिली हुई है।

4.परमेश्वर के ज्ञान की कोई सीमा नहीं

भजन संहिता 139: 1-4 पढ़ें। परमेश्वर सारी बातों को देखता है और सब जानता है। वह प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष वस्तुओं को देखता है। वह आन्तरिक व बाहरी चीज़ों को देखता है। वह शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक व आत्मिक वास्तविकताओं को देखता है। सृष्टि में कुछ भी परमेश्वर की नज़रों से छिपा हुआ नहीं है। हर चीज़

उसकी आखों के सामने बेपरदा है जिसके सामने हमें एक दिन अपना हिसाब देना है(इब्रानियों 4:13)। परमेश्वर हमारी महत्वाकक्षाओं,सपनों, विचारों, हमारे एहसास, हमारी बातों व हमारे कामों को जानता है। परमेश्वर हमारे उददेश्यों व हमारे स्वभाव को जानता है। इसलिए हम पारदर्शी व भयरहित जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

5.परमेश्वर की उपस्थिति असीमित है।

भजन संहिता 139:7-12 **पढं**। परमेश्वर आत्मा है। वह किसी एक शरीर या किसी एक स्थान में उपस्थित होने का मोहताज नहीं है। वह जगत में हर जगह मौजूद है और वह जगत की हदों से परे है। कोई भी अपने आप को परमेश्वर से छुप नहीं सकता। कोई भी जन ऐसे स्थान पर नहीं जा सकता जहां परमेश्वर न हो।

निष्कर्ष । हालांकि मनुष्य परमेश्वर के व्यक्तित्व की गहराई को, उसकी विशेषताओं और उसकी उपस्थिति को, उसकी योजनाओं और उसके लक्ष्यों को नहीं जान या नाम सकता लेकिन फिर भी हम बाइबल के द्वारा और मसीह में होकर हम परमेश्वर व उसके विचारों को, उसकी बातो, और उसके द्वारा प्रगट किये गये कामों को जान सकते हैं।

आराधना: समूह का अगुवा परमेश्वर के असीमित होने के लिए परमेश्वर की अराधना करे। तीन लोगों के छोटे समूह में परमेश्वर की आराधना करें।

3	**बाँटें**(20 मिनट)	**(शान्त समय)** **उत्पत्ति 1:1-4:26**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में बताएं कि अपने दिये गये वचनोंके आधार पर परमेश्वरके साथ एकान्त समय बिताने पर क्या सीख(उत्पत्ति 1:1-4:26)।
जब कोई व्यक्ति अपने अनुभवों को बांट रहा हो तो उसे गम्भीरता से लें तथा स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षाएं** (70 मिनट)	**(शान्त समय)** **प्रश्न पूछने का तरीका**

परिचय: जब आप यीशु के साथ हर रोज समय व्यतीत करेंगे तब आप अपने जवन में उन आशीषों का अनुभव कर पाएंगे जिन्हे उसने आपके लिए बनाया है। परमेश्वर के साथ रोज़ समय बिताना जीवन का महत्वपूर्ण दैनिक अनुशासन है। मैनुएल 1 अध्याय में हमने परमेश्वर के साथ सय बिताने के पसन्दीदा सत्या वाला तरीका सीखा था। इस अध्याय में हम परमेश्वर के साथ समय बिताने का एक और तरीका सीखने जा रहे हैं, अर्थात प्रश्नों वाला तरीका। परमेश्वर के साथ समय बिताने के लिए उस तरीके को अपनाएं जो आपको सहज लगे।

क-यीशु मसीह(परमेश्वर)के साथ प्रतिदिन संगति करने (शान्त समय बिताने) की प्रेरणा

1. यीशु मसीह के साथ संगति करने की शुरूआत।

पढ़ें: यूहन्ना 6:27-29; यूहन्ना 8:24

सिखाएं: यीशु मसीह के साथ संगति करने की शुरूआत उस पर विश्वास करने से होती है। बिना विश्वास के यीशु मसीह के साथ कोई भी जन संगति नहीं कर सकता । इसलिए यीशू मसीह क साथ संगति तभी सम्भव हो सकती है जब आप उसे अपने जीवन में अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता या प्रभु करके स्वीकार कर लेते हैं।

2. यीशु मसीह के साथ संगति करने के कारण

खोजें व चर्चा करें। मसीही व्यक्ति के लिए यीशु मसीह के साथ संगति करना क्यों अनिवार्य है? मसीही जन के लिए यीशु के साथ प्रतिदिन व्यक्तिगत समय व्यतीत करना क्यों ज़रूरी है?

मसीह के साथ संगति करना इसलिए अनिवार्य है क्योंकि ऐसा करने से हम परमेश्वर के अनुग्रह व सत्य का अनुभव करते हैं।

यूहन्ना 1:16-17 **पढ़ें।** यीशु मसीह के साथ संगति करेने से अनुग्रह व सत्य की प्राप्ति होती है। यह सत्य नहीं है कि मसीहियों को परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए सैंकड़ों नियमा या व्यवस्थाओं (करो या मत करो) का पालन करना पड़ता है। इस प्रकार की मसीहियत असम्भव व बोझ है। क्योंकि यीशु मसीह की मृत्यु व पुनरूत्थान को कारण हमें अनुग्रह की प्राप्ति हुई है। अनुग्रह पापों को क्षमा करके हमें परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी बनाता है। इसके अलावा अनुग्रह से ही,परमेश्वर मनुष्य पाप, उद्धार तथा किस प्रकार जीवन व्यतीत किया जाए के सम्बन्ध में सच्चाइ पता चलती है। जिस प्रकार से समुद्र की लहरें एक के बाद एक आती हैं उसी प्रकार हम यीशु मसीह के साथ प्रतिदिन संगति करने से एक के बाद एक आशीषों का अनुभव कर पाते हैं। आप निश्चय की परमेश्वर की आशीषों से वंचित नहीं रहना चाहेगें, क्या यह सत्य नहीं है?

मसीह के साथ संगति करना इसलिए अनिवार्य है, क्योंकि ऐसा करने से हम खुद को जान पाते हैं।

यूहन्ना 2:25 **पढ़ें।** हो सकता है कि हम सोचते हों हम खुद को बेहतर जानते हैं परन्तु यह बिल्कुल सच नहीं है। केवल यीशु मसीह ही हमें पूरी तरह से जानते हैं। मसीह के साथ संगति करने से हमें स्वयं को पहिचानने में सहायता मिलती है। क्योंकि यीशु मसीह हमारे बारे में सब कुछ जानते हैं, हमारी कमजोरियां, हमारी क्षमताएं, और जब हम उसके साथ संगति करते हैं तो वह हमारे व्यक्तित्व व चरित्र का निर्माण करने में हमारी सहायता करता है।

मसीह के साथ संगति करना इसलिए अनिवार्य है, क्योंकि ऐसा करने से हम ग्रहण किया हुआ महसूस करते हैं।

यूहन्ना 6:37 **पढ़ें।** यीशु के साथ संगति रखने से हम ग्रहण योग्य ठहरते हैं। प्रत्येक मनुष्य की तीन भावनात्मक जरूरतें होती हैं अर्थात स्वीकृति, सुरक्षा व अहमियत। प्रत्येक माने की सबसे बढ़ी जरूरत यह जानना है कि उसे स्वीकार किया गया है या वह स्वीकृत महसूस करें । हम जैसे है उसी अवस्था में अर्थात अपनी विशेष योग्यताओं व कमज़ोरियों के साथ ग्रहण किया जाना चाहते हैं।

यीशु मसीह के साथ संगति हमें एक एहसास दिलाती है कि हम महत्वपूर्ण ह हमें लोग चाहते हैं, हमें प्रेम किया जाता है।

मसीह के साथ संगति करना इसलिए अनिवार्य है, क्योंकि ऐसा करने से हमें परमेश्वर की अगुवाई मिलती है।

यूहन्ना 8:12 **पढ़ें।** यीशु के साथ संगति रखने से हमारे जीवन को स्पष्ट मार्गदर्शन मिलता है। मसीह की ज्योति में चलकर हम परमेश्वर के सच्चे चारित्रिक गुणों को देख सकते, और जान सकते हैं कि वह हमें किस तरह चलाना और निर्णय लेते देखना चाहता है। जब हम मसीह की ज्याति में होकर चलते हैं तो परमेश्वर की इच्छा को पहिचानना कठिन नहीं होता। अतः यीशु के साथ रोज़ संगति करने से हमें रोज परमेश्वर की इच्छज्ञ में अगुवाई प्राप्त होती है। इस संगति के द्वारा पता चलता है कि वह हमें क्या बनाना और कैसे काम करवाना चाहता है।

मसीह के साथ संगति करना इसलिए अनिवार्य है,क्योंकि ऐसा करने से हम सच्ची आज़ादी महसूस करते हैं।

यूहन्ना 8:31-32 **पढ़ें।** यीशु मसीह के साथ संगति करने से हमें आज़ादी मिलती है। यीशु मसीह के साथ संगति करने से सम्पूर्ण मानवजाति को आज़ादी मिलती है। इसके द्वार हमें अज्ञानता व झूठी शिक्षाओं से आज़ाद मिलती है। इसके द्वारा हमें बुरे विचारों, बुरे व्यवहार, बुरी आदतों और बुरे सम्बन्धों से भी छुटकारा मिलता है। अतः प्रतिदिन यीशु के साथ संगति करने से हमें प्रतिदिन जकड़ने वाली बातों से आज़ादी मिलती है।

मसीह के साथ संगति करना इसलिए अनिवार्य है, क्योंकि ऐसा करने से हमें सुरक्षा का अनुभव होता है।

यूहन्ना 10:27-28 **पढ़ें।** यीशु के साथ संगति रखने से हमें सुरक्षा मिलती है। मनुष्य की दूसरी भावनात्मक जरूरत सुरक्षा है। कोई भी परिस्थिति या केई मनुष्य हमें परमेश्वर के हाथों से छीन नहीं सकता है। अतः यीशु मसीह के साथ संगति निभाने से हमें निरन्तर सुरक्षा का आभास होता है कि उस दिन चाहे जा भी हो उसमें परमेश्वर की श्रेष्ठ अनुभूति शामिल है, और वह हमें परमेश्वर या परमेश्वर के प्रेम से कभी अलग नहीं कर सकता। (रोमियों 8:37-39)।

मसीह के साथ संगति करना इसलिए अनिवार्य है, क्योंकि ऐसा करने से हम परमेश्वर के प्रेम व उसकी उपस्थिति को महसूस करते है।

यीशु मसीह के साथ प्रतिदिन संगति करने से हमें उसके धैर्य, भलाई और भरोसे का अनुभव होता है। वह हमें उत्साहित करता तथा हमारे जीवन तथा जीवन की अलग-2 परिस्थितियों में अपनी उपस्थिति का एहसास करवाता है।

मसीह के साथ संगति करना इसलिए अनिवार्य है, क्योंकि ऐसा करने से हम अहमियत को महसूस करते हैं।

यूहन्ना 5:5 पढ़ें। यीशु मसीह के साथ संगति निभाने से हमें बहुतायत का फल प्राप्त होता है। मानवजाति की तीसरी सबसे बड़ी ज़रूरत उसकी अहमियत होती है। हम एक ऐसा जीवन पसन्द करते हैं, जिसकी कोई अहमियत हो तथा जिसके द्वारा जीवन बनने में योगदान होता हो। अगर हमारी संगति यीशु मसीह के साथ नहीं है तो हम अन्तकाले के लिए किसी प्रकार का कोई प्रभावशाली कार्य नहीं कर सकते। यीशु मसीह की

संगति करने पर हम अधिक फल बल्कि बने रहने वाला फल ला सकते हैं। यीशु मसीह के साथ लगातार संगति करने से हमारा जीवन लगातार सार्थक बनता है। हम अनुभव करते हैं कि यीशु लोगों व परिस्थितियों को प्रभावित करने के लिए हमारा इस्तेमाल कर रहे हैं।

मसीह के साथ संगति करना इसलिए अनिवार्य है, क्योंकि ऐसा करने से हम सच्ची मित्रता का अनुभव करते हैं।

यूहन्ना 15:14-15 **पढ़ें।** यीशु मसीह के साथ संगति होने से उसके साथ मित्रता बढ़ती है। हमारा मित्र होने के नाते, मसीह हमारी संगति की चाह रखता, और वह उस संगति के लिए सब प्रकार का बलिदान चढाता है। वह हमारा मित्र होने के लिए हमारे ध्यान को आकर्षित करता है। वह हमें गलत काम करने के लिए कभी नीचे नही खींचता। वह अपने सबसे निजि विचार को हमारे साथ बाँटता है। यीशु मसीह के साथ दैनिक संगति करने से उसके साथ हमारी मित्रता बढ़ती है।

निष्कर्ष: यीशु मसीह के साथ संगति करना, जिसमें दैनिक शान्त समय भी शामिल है, हमारे जीवन में सभी आशीषों को प्रदान करता है, जो उसने मसीहियों के लिए नियोजित कर रखी है(इफिसियों 1:3)।

ख- यीशु मसीह के साथ (परमेश्वर) दैनिक संगति (शान्त समय) किस प्रकार व्यतीत करें।

सिखाएं- परमेश्वर के साथ संगति करने के लिए अलग किये गये समय को "शान्त समय" कहते हैं। अपने पहले ही परमेश्वर के साथ संगति करने के "पसन्दीदा सत्य" तरीके को (मॅनुएल1, परिशिष्ट1 को देखें)सीख लिया है। आज आप परमेश्वर के साथ समय बिताने के लिए " प्रश्नों" के तरीके को सीखेंगे। इस तरीके में भी 5 कदम हैं:

1.परमेश्वर से प्रार्थना

अपने ध्यान को परमेश्वर की ओर लगाने के लिए एक छोटी सी प्रार्थना करें। उदाहरण के लिए आप प्रार्थना कर सकते हैं," हे पिता मुझ पर प्रगट करें कि आप कौन हैं।" "मुझे आपकी इच्छाओं को पूरा करना सिखा!" "मुझे वह मार्ग दिखा जिस पर मुझे चलना चाहिए(भजन 143:8,10)। या " हे परमेश्वर मुझे आज आपकी वाणी सुनने दें"(इब्रानियों 3:15)। या " हे परमेश्वर मेरी आँखों को खोल ताकि मैं तेरी व्यवस्था को देख सकूं" (भजन 119:18)!

2. अपनी बाइबल पढ़ें

बाइबल के एक अनुच्छेद या एक अध्याय को पढ़ें। एक बाइबल अध्ययन परियोजना (मैनुएल 1 परिशिष्ट 2) आपको क्रमबद्ध तरीके से बाइबल पढ़ने में सहायता करेगी। बाइबल में निशान लगाने की प्रक्रिया से (मैनुएल 1,परिशिष्ट 3) आपको बाइबल अध्ययन करने में सहायता मिलेगी। मसीहियों या विश्वासियों का छोटा समूह रोज मिलकर परमेश्वर के साथ संगति कर सकते हैं। इससे प्रत्येम जन को यीशु मसीह के साथ दैनिक संगति करने में सहायता मिलेगी। बहुत से देशों में मसीही लोग परमेश्वर की संगति में समय बिताने के लिए सुबह जल्दी मिलकर, एक साथ शान्त समय बिताते, बाइबल पढ़ते तथा प्रार्थना करते हैं।

3. प्रश्नों का चुनाव करें।

जिस भी विषय पर आप सीखना चाहते हैं उस शीर्षक पर आधारित एक या ज्यादा प्रश्नों का चुनाव करें।

प्रश्न 1: परमेश्वर

मैं बाइबल में परमेश्वर, मसीह, पवित्र आत्मा के बारे में क्या सीखता हूँ? वह कैसा है? वह क्या कहता है? वह क्या करता है? वह अभी मुझमें क्या कर रहा है? वह इस समय मेरे जीवन में क्या कर रहा है?
उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 22:8,10 में पौलुस के दो प्रश्नों को देखें। "हे परमेश्वर तू कौन है?" "हे प्रभु मैं क्या करूँ?"

प्रश्न 2. लोग

बाइबल में मैं लोगों के बारे में क्या सीखता हूँ? लोग कैसे होते हैं? वे क्या कहते हैं? वे क्या करते हैं? उनके उद्देश्य, व्यवहार, इच्छाएं, उपलब्धियां और गलतियां क्या होती हैं?

प्रश्न 3. मैं

बाइबल में मैं अपने बारे में क्या सीखता हूँ? मेरा मूल क्या है? मं कौन हूँ? मैं क्या सोचता और विश्वास करता हूँ? मैं किन कामों को करता या नहीं करता हूँ? मैं क्या बन सकता हूँ?

प्रश्न 4. परिवर्तन

परमेश्वर मुझे क्या सिखाना या विश्वास दिलाना चाहते हैं? परमेश्वर मुझे क्या बनाना और मुझसे क्या करवाना चाहते हैं? परमेश्वर का वचन या परमेश्वर मुझसे किस प्रकार के प्रतिउत्तर की अपेक्षा करते हैं?
आप अपने मन से भी प्रश्नों को बना सकते हैं। उदाहरण के लिए:

प्रश्न 5. मूल्यांकन

आज की तारीख में यीशु मसीह के साथ मेरा क्या रिश्ता है? और भविष्य में मैं उसके साथ किस प्रकार का रिश्ता कायम करना चाहता हूँ?

प्रश्न 6.समझ

वह कौन सी बात है जिसे मैं नहीं समझ सका हूँ और जिसे मैं समूह के सामने रखना चाहता हूँ?

प्रश्न 7 भावनाएं

मैं बाइबल में पढ़ी गयी बातों के बारे में क्या सोचता हूँ? क्यों मुझे इसके कारण डर लगता है या मुझे आशा मिलती है? क्या मुझे असहज महसूस होता है?

प्रश्न 8 सेवकाई

यीशु मसीह लोगों से कैसे जुड़े थे? यीशु किस प्रकार लोगों की सेवा करते थे? यीशु किस प्रकार लोगों को सिखाते या प्रशिक्षित करते हैं? यीशु लोगों के प्रश्नों का किस प्रकार उत्तर देते हैं? यीशु की कठिनाईयों व चुनौतियों के प्रति क्या प्रतिक्रिया होती थी?

प्रश्न 9 रिश्ते

मुझे दूसरे मसीहियों व मण्डली से किस प्रकार सम्बन्ध बनाना चाहिए? मुझे झूठे भविष्यवक्ताओं से कैसा बर्ताव करना चाहिए? मुझे गरीब,बाझे से दबे व विक्लांग लोगों के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिए?

प्रश्न 10 चरित्र

मुझे चरित्र के किस सदगुण को विकसित करना चाहिए?

4 अपनी उपलब्धियों पर मनने करें:

अपनी उपलब्धियों पर मनन करें, क्योंकि आप सत्य को समझना उसके द्वारा नयी शक्ति प्राप्त करना और प्राप्त सच्चाई को अभ्यास में लाना चाहते हैं।

मसीही ध्यान दूसरे धर्मों के ध्यान से भिन्न होता है। मसीही ध्यान में निम्नलिखित चार बातें पायी जाती हैं: सोचना,प्रार्थना करना, इस्तेमाल करना व लिखना।

सोचें

आप सीखने की इच्छा से ध्यान करते हैं इसलिए आप महत्वपूर्ण शब्दों पर विचार करते हैं।

प्रार्थना करें

आप जानना चाहते हैं कि परमेश्वर आपसे क्या रहे हैं। अत: आप अपने हृदय में प्रार्थना करके प्रभु से पूछें कि प्रभु उसने आपके लिए क्या योजना बनायी है। आप प्रभु से सच्चाई की व्याख्या करने तथा उस सच्चाई को आपके जीवन में इस्तेमाल करने के तरीके को बताने के लिए कहें। प्रार्थना के भाव में होकर परमेश्वर के साथ सच्चाई पर चर्चा करें। अपनी आत्मा में पमरेश्वर की वाणी को सुनने की अपेक्षा करें।

सम्बन्ध बनायें

आप सत्य का अभ्यास करना चाहते हैं। अत: आप सच्चाई को अपने व्यक्तिगत जीवन तथा उस संससार से जोड़ते हैं जिसमें आप रहते हैं। स्वयं से कुछ इस प्रकार के प्रश्न पूछें "इस सत्य के प्रकाश के बाद मुझे किन बातों की जरूरत है? "कौन सी सच्चाई मुझे पुन:नवीन बनाती या नई ताकत देती है।

"परमेश्वर मुझसे क्या करवाना चाहते हैं? अगर बात को छोटा करके कहा जाए तो "परमेश्वर मुझसे कैसी प्रतिक्रिया चाहते हैं?"

लिखें:

आप सत्य को याद रखना तथा समझाना चाहते हैं। इसलिए अपने ध्यान की सबसे महत्वपूर्ण विचारों को आप लिख लेते हैं।

5. अपने उत्तर के लिए प्रार्थना करें।

अपने ध्यान के महत्वपूर्ण विचाररों के लिए प्रार्थना करें। याद रखें 'प्रार्थना' परमेश्वर की बातों के प्रति आपका प्रतिउत्तर है।

ग. यीशु मसीह (परममेश्वर) के साथ दैनिक संगति में समय बिताने के लिए दैनिक सुझाव।

1. दैनिक आदत

सिखाएं: परमेश्वर के साथ संगति का दैनिक समय निर्धारित करें।

अकेले या अन्य लोगों के साथ मिलकर परमेश्वर के साथ संगति करने का समय अलग करें।

पसन्दीदा सत्यों' व प्रश्नों के तरीकों का इस्तेमाल करें। इसके अलावा बाइबल अध्ययन योजना तथा बाइबल मं निशान लगाने वाली प्रणाली का इस्तेमाल करें।

2. लेखा रखना:

सिखाएं। एक कॉपी रखें।

निम्नलिखित बातों को लिखने की आदत बनाएं: दिनांक; उन बाइबल वचनों को लिखें जिन्हे आपने अपने ध्यान के समय में पढ़ा हो, प्रश्न तथा वे प्रश्न जिनके उत्तर आप खोज रहे हैं, तथा सारी महत्वपूर्ण

उपलब्धियों तथा ध्यान करते समय प्राप्त सारे विचारों को लिखें।अपने विचारों का प्रतिपादन करना या लेखा रखने से आपको परमेश्वर की सच्चाई को स्मरण करने, स्पष्ट करने तथा समझाने में सहायता मिलेगी। आपकी कॉपी परमेश्वर के साथ बिताये गये समय के बारे में दूसरों को बताने में सहायता करेगी। इससे आपको यह भी स्मरण करने में सहायता मिलेगी कि परमेश्वर ने बीते दिनों में आपसे क्या कहा था। जब आप इन बातों को बाद में पढ़ेगे तब आपको पता चलेगा कि बीते दिनों में परमेश्वर ने आपकी किस प्रकार अगुवाइ की थी।

3. एक साथ:

सिखाएं। सामुहिक तौर पर परमेश्वर के साथ संगति करें। प्रश्नों के तरीके का इस्तेमाल करते हुए निर्णय लें कि आप कौन से प्रश्न पर चर्चा करना चाहते हैं। आप अपनी उपलब्धियों व अपने अनुभवों को बांट सकते हैं। साथ मिलकर प्रार्थना करें।

4. बांटना

सिखाएं। हर सप्ताह परमेश्वर के साथ बिताए गये समय को दूसरों के साथ बाटें। यदि आपका समूह सप्ताह में केवल एक ही बार मिलती है तो पूर्ण सभा के कुछ हिस्सें को अपने अनुभव बांटने के लिए इस्तेमाल करें। प्रत्येक व्यक्ति पिछले सप्ताह परमेश्वर के साथ बिताए गये समय के अनुभव को समूह के साथ साझा करें।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[प्रतिक्रियाएं]* **परमेश्वर के वचन के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में प्रार्थना**

आज सीखी गयी शिक्षाओं की प्रतिक्रिया के रूप में अपने समूह में परमेश्वर से ***संक्षिप्त*** प्रार्थना करें।
या समूह को दो दो या तीन तीन में बाँट कर सीखी गयी बातों पर प्रतिक्रिया देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2मिनट) *[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें।
   अपने समूह में अभ्यास करें: बाइबल में से किसी अनुच्छेद को चुनें, उदाहरण के लिए भजन संहिता 34 या मत्ती 8। प्रश्न पूछने के तरीके का इस्तेमाल करते हुए सामुहिक तौर पर परमेश्वर के साथ संगति करने का समय निर्धारित करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रश्न पूछने वाले तरीके का इस्तेमाल करते हुए प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: उत्पत्ति 6:1-9:28 में से हर रोज़ आधा अध्याय पढते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। प्रश्न पूछने वाले तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्याय अगले बाइबल अध्ययन की घर पर तैयारी करें। उत्पत्ति 1:24-2:25। विषय: कलीसिया का सांस्कृतिक लक्ष्य? बाइबल अध्ययन के पाँचों चरणों का इस्तेमाल करें। नाट्स बनाएं।
4. प्रार्थना इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे को अद्यावधिक बना कर रखें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा सामग्री को शामिल करें।